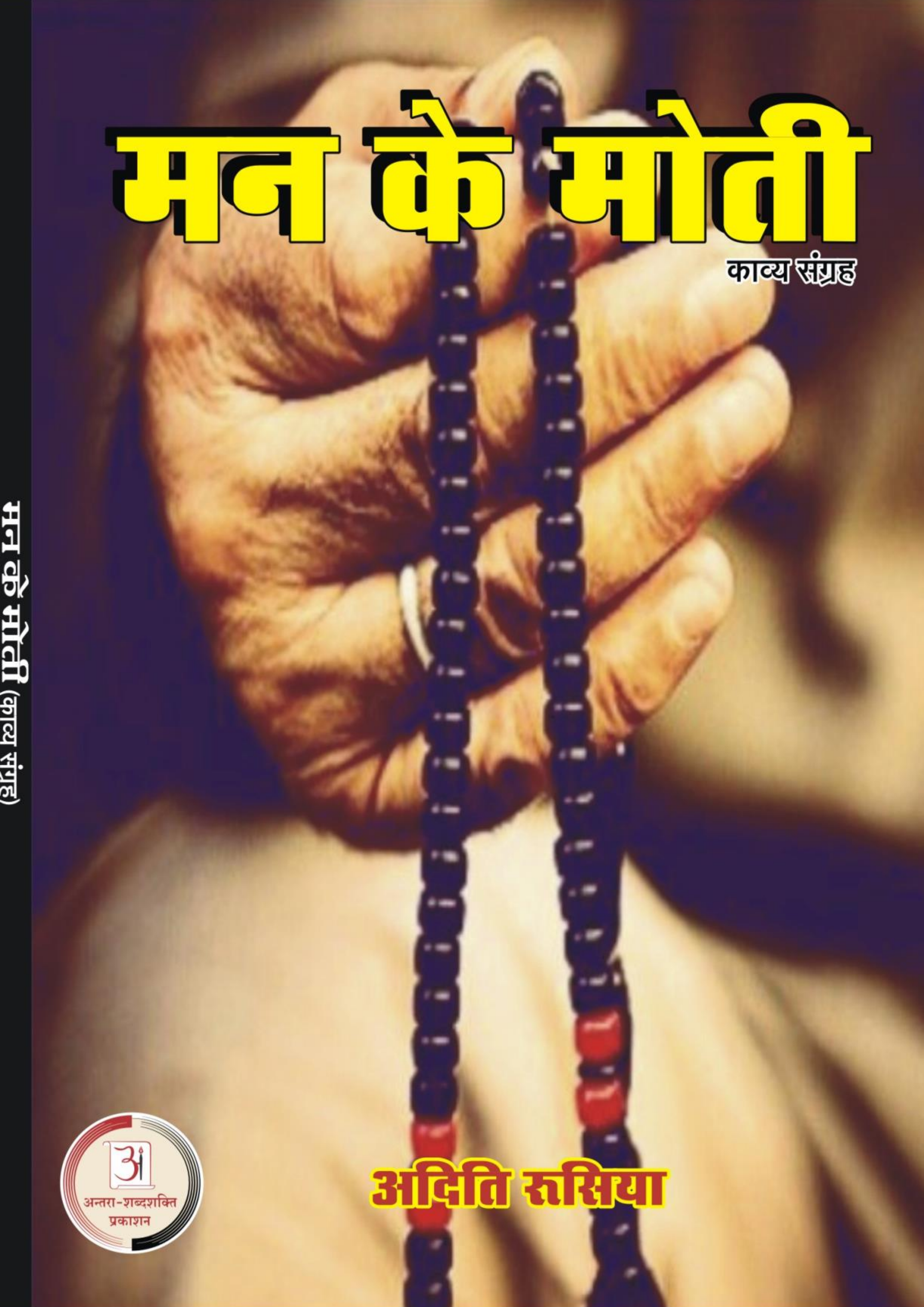
मन के मोती
काव्य संग्रह
अदिति रुसिया
अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन
मन के मोती (काव्य संग्रह)

मन के मोती

अदिति रुसिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-256-2
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी,वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) **481331**
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल -antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट -www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- अदिति रुसिया 2020
मूल्य- 250.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ADITI RUSIA

वैधानिक चेतावनीः इस पुस्तक का -सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	मन के मोती	9
2.	बाँसुरी	10
3.	सामर्थ्य	11
4.	कुछ ख्वाहिशें अधूरी सी	12
5.	क्षमता	13
6.	पाषाण	14
7.	जीत	16
8.	रोना-धोना	17
9.	मैं और तुम	18
10.	अंधकार	19
11.	शक	20
12.	सुन्दर	21
13.	बुलबुला	22
14.	गुरु	23
15.	संकोच	24
16.	परिवार	25
17.	आकांक्षा	26
18.	लाज	27
19.	फुलवारी	28
20.	राधे कृष्णा	29
21.	आकाश	30

22.	अभिलाषा	31
23.	मार्गदर्शन	32
24.	महक	33
25.	माहौल	34
26.	माँ कहती है	35
27.	मोरपंख	36
28.	रिमझिम फ़ुहार	37
29.	औढ़र दानी	38
30.	भीड़	39
31.	ताप	40
32.	तपन	41
33.	मन में हो लगन	42
34.	महामारी	43
35.	बर्ताव	44
36.	व्यवहार	45
37.	मज़दूर	46
38.	कुंभकार	47
39.	चार दीवार	48
40.	खोज	49
41.	पढ़ाया था	50
42.	कविता मेरे नाम की	51
43.	फूलों की तरह	52
44.	शाम का इशारा है	53

45.	ये ख़ाली सोफे	54
46.	माँ तुमसे जो सीखा है	55
47.	कलम	57
48.	सखा	59
49.	अच्छा लगता है	60
50.	बिछोह	62
51.	अन्नदाता कृषक	64
52.	मुट्ठी भर अनाज	65
53.	आशा से आकाश थमा	67
54.	कुम्हारन	68
55.	छवि	69
56.	चार दिवारी	70
57.	उदाहरण	71
58.	दृश्य	72
59.	आओ दीप जलाएँ	73
60.	आत्मविश्वास	74
61.	वो सुबह कभी तो आएगी	75
62.	विनय	76
63.	विनती	77
64.	कैद	78
65.	कर्मवीर	80
66.	जागो मोहन जागो	81
67.	विपदा	82

68.	**तप**	83
69.	**शंखनाद**	84
70.	**फाँसी**	86
71.	**स्वार्थी**	87
72.	**तुम लक्ष्मी बन आना**	88
73.	**डरो न**	89
74.	**कुछ अलग**	90
75.	**हुनर**	91
76.	**मधुमास**	92
77.	**मेरे मनमीत**	93
78.	**एक छोटी सी भूल**	94
79.	**मुबारक**	95
80.	**ख़्वाब**	96

लेखन की प्रेरणा

पढ़ने का शौक़ तो बचपन से था। बहुत सारी नॉवेल पढ़ीं हैं बचपन में। पापा के साथ हमेशा हम कवि सम्मेलनों में जाया करते थे तो कविता पढ़ना व सुनना अच्छा लगता था। पापा की एक डायरी थी जिसमें ज़फ़र, शकील बदायूनी, शमीम जयपुरी और भी शायरों की शायरियाँ लिखी थीं। पापा को शेरों-शायरी एवं क़व्वाली का बड़ा शौक़ था।

पापा की डायरी पढ़कर अपने मन से क़रीब ३५-४० शायरियाँ लिखीं। तक़रीबन इतनी ही मेरी कविताएँ भी हैं। 10th-11th में थी तब छत पर पढ़ाई करते हुए बग़ल की छत पर कबूतरों को दाना चुगते देखा मन में ख़्याल आया कविता लिखने का और एक कविता यूँ ही लिख ली शीर्षक दिया बेबस इंसान। इसी तरह कई कविताएँ लिखीं। पहले मैंने एकता के नाम से सारी कविताएँ लिखीं हैं, जो आज भी मेरी डायरी में हैं। मुझे गाना सुनना, गाना और लिखना भी अच्छा लगता है। गानों से कई डायरियाँ भरी पड़ी हैं डाँट भी बहुत खाई अपने इस शौक़ के लिए। सन १९९२ में २० वर्ष की थी शादी हो गई। शादी के बाद सन १९९२ में ही माँ पर एक लेख लिखा। कुछ कविताएँ संजय जी के लिए लिखीं। आख़िरी कविता मैंने १९९३ में अपने बेटे के लिए लिखी जो अब इस दुनियाँ में नहीं हैं। फिर कार्तिक हमारी ज़िंदगी में आया तो लेखन कार्य बंद हो गया। दोनों बच्चों कार्तिक और कावेरी को उच्च शिक्षा देना

मेरा उद्देश्य था। मुझे लगता था मैंने पढ़ाई नहीं की पर दोनों बच्चों को अच्छी शिक्षा देना हैं। इसके लिए मुझे काफ़ी संघर्ष भी करना पड़ा। घरवालों के ख़िलाफ़ जाकर दोनों बच्चों को बालाघाट पढ़ने भेजा। सब कुछ आसन नहीं था। पर मैंने किया।

काफ़ी लम्बे अरसे के प्रीति ने मुझे दुबारा लिखने के लिए प्रेरित किया ये ४-५ अप्रैल की बात है जब प्रीति ने मुझे अंतरा में जोड़ा और ६ अप्रैल २०१७ को मैंने लिखा ख़ुशी पर। संजय जी व बच्चों का भी पूरा सहयोग मिला। प्रीति व संजय जी की प्रेरणा आज मैंने कई कविताएँ, लघु कथाएँ लेख एवं संस्मरण लिखे। वैसे तो समाजिक कार्यक्रमों में हमेशा बढ़ चढ़ कर भाग लेती आई हूँ और हमेशा सम्मान प्राप्त किया है पर लेखन के क्षेत्र में जो सम्मान मिला उसका सारा श्रेय मेरी प्यारी सखी प्रीति और संजय जी को जाता है क्योंकि दोनों के बिना मुक़ाम हासिल कर पाना असंभव था। मेरी किताब मन के मोती जिसमें मैंने अपने मनोभावों को अपनी लेखनी के माध्यम से मोतियों की तरह शब्दों में पिरोने का प्रयास किया है।

अदिति रूसिया

वारासिवनी

मन के मोती

अपने मन में आने वाले विचारों को
मैंने अपने शब्द रूपी
मोतियों से पिरो माला बनाई है
सहेज रखा है अपने अंदर उमड़ते घुमड़ते
विचारों को मोतियों की तरह
हमेशा यही सोचती हूँ
मैं अपने शब्दों के माध्यम से
अपने मन की बात मैं
सबके दिल तक पहुँचा सकूँ
समय की रफ़्तार बहुत तेज है
उसके साथ मैं
कदम से कदम मिला चल सकूँ
अपने विचारों को, अपने अनुभवों को
सबके साथ बाँट सकूँ
सार्थक हो मेरा लेखन
मैं अविरल लेखन करती रहूँ
कलम मेरी ताक़त है
ये ही तो है जो मेरे मन के मोतियों को
शब्दों में पिरो एक सूत्र में बाँधती है
और मैं अपने मनोभावों को
काग़ज़ पर लिख पाती हूँ!

बाँसुरी

पानी की मटकी धर
यमुना तीरे बातें करती
ललिता और विशाखा
आज श्याम हैं आने वाले, मिलने संग हैं राधा।

बात छुपा ली राधा ने पर
जान गए सखी हम
सुना है आएँगे वो
मिलने यमुना तट पर
फिर जाएँगे रास रचाने, मधुबन में संग राधा।

आ जाना तुम भी ललिता
लेके सब संग सखी सहेली
सुनते ही धुन मुरली की
भागी भागी दौड़ी
रास रचेगा मधुबन में भारी, खूब सजेगी कृष्ण संग राधा।

ओढ़ पीताम्बर आएँगे कान्हा
आएगी राधा गोरी
पहन गुलाबी चोली
नैनों में काजल मोटा
होंठों पे होगी लाली, चाल चले मतवाली राधा।

इंद्र अप्सरा नृत्य करेंगे
आएँगे गौरा संग भोले भंडारी
महारास जब होगा
सधबुध खो जाएँगे नर नारी
रास बिहारी जब बाँसुरी बजाएँ

सामर्थ्य

मुझमें इतनी सामर्थ्य कहाँ
जो मैं तेरा क़र्ज़ चुका पाऊँ।
माँ तू तो है ममता की मूरत
तेरी छवि कहीं न मैं पाऊँ।

न जाऊँ मैं काशी मथुरा
चारों धाम तुम्हीं में पाऊँ।
माँ तुझमें ही भगवान बसे
तेरी छवि कहीं न मैं पाऊँ।

लोग मुझे कहते तेरी परछाई
पर मैं उनको ये कैसे बतलाऊँ।
माँ तेरे जैसा न कोई दूज़ा जग में
तेरी छवि कहीं न मैं पाऊँ।

किए तुमने कितने ही त्याग
जीवन हमारा बनाने में।
तब जाकर पाया हमने
तेरी परछाई बनाने का सम्मान माँ।

बन सकूँ तुम जैसा
कर सकूँ सहन हर कष्ट मैं।
न निकले उफ़्फ़ भी मुँह से
तब कहलाऊँ तेरी परछाई माँ।

तुम्हारा कोई एक गुण भी पा जाऊँ
हर लम्हा हँस कर जी पाऊँ।
तुम्हारे हाथों का स्वाद मैं जब पा जाऊँ
तब कहलाऊँ तुम्हारी छाया माँ,... मुझमें इतनी....।

कुछ ख्वाहिशें अधूरी सी

कुछ ख्वाहिशें अधूरी सी
करना जिसे पूरा है अभी बाक़ी
पर करें कैसे ये सोचते हैं हम
उलझने कुछ कम नहीं
ज़िंदगी में हमारी
कुछ बचपन में संजोए थे
वो ख़्वाब है अधूरे
कुछ चाहते ऐसी
जिसे न कह सके हम
पापा की परी बन जी थी जो ज़िंदगी
उस पल को फिर जीने की
एक ख्वाहिश है अभी बाक़ी
कुछ ख्वाहिशें की पूरी माता पिता ने
कुछ हुईं पूरी पिया के आँगन में
मगर कुछ तो है अधूरा
कुछ ख़्वाब तो अब भी हैं बाक़ी
कुछ ख़्वाब जो देखे थे अपने लिए
कर न सके जो पूरे
उन ख़्वाबों को जीते हैं
हम बच्चों में अपने
मगर कुछ पूरे हुए
कुछ अब भी हैं बाक़ी
कहाँ होती हैं चाहते हमारी पूरी कभी
कुछ न कुछ रह जाती हैं अधूरी
लाख हम जी लें शान की ज़िंदगी
मगर कुछ न कुछ कसर रह ही जाती है बाक़ी!

क्षमता

कभी किसी नारी की
क्षमता का आँकलन न करना
कभी करो तो उससे पहले खुद को आँक लेना
क्या तुम उसके काबिल हो या नहीं
क्योंकि हर हाल में तुम सदा
उससे पीछे ही नज़र आओगे
कभी सोचा है जिस नारी की क़ाबिलियत पर
करते हो सदा तानाकशी
वो नारी ही है
जो तुम्हारा हर पग-पग पर साथ निभाती है
वो नारी ही है जो सदा
तुम्हारी हर बात बिना कहे समझ जाती है
सब कुछ सहकर उफ़्फ़ तक न मुँह से निकालती है
भोर से लेकर रात तक तुम्हारे
हर काम बिन चाहत करती जाती है
अपना सर्वस्व लूटा देती है
पर बदले में कुछ नहीं चाहती है
निरंतर चलती रहती है, थकती नहीं,
फिर भी सदा
उसकी क्षमता, क़ाबिलियत और योग्यता पर
प्रश्नचिन्ह ही लगाए जाते है?

पाषाण

राह निहारती बैठी थी तुम्हारी
सागर के तट पर मैं...
आए न बैरी साजन तुम
दिल में न दर्द था तुम्हारे
न थी फ़िक्र जरा भी मेरी
जिसे चाहा था कभी तुमने
यूँ ठुकरा दिया उसे पल में
खेला भावनाओं से मेरी
तुम तो नहीं मगर
हो गई पाषाण मैं...
तैरती है कश्ती
सागर की लहरों में
खाती हिचकोले
कभी इधर कभी उधर
जानता समंदर भी है
ये न ठहरी एक जगह
आज इधर है
कल होगी उधर
पर करता हिफ़ाज़त
उसकी प्रेयसी सा!

न डूबने देता है
तूफ़ानों में भी उसको
लगा रखता है सीने से उसको
तुम निष्ठुर निर्मोही बन
यूँ छोड़ चले गए
बीच मझधार मुझको
आज भी बैठी
इंतज़ार में तुम्हारे
बन पाषाण मैं...
है एक आस
नज़रों में प्यास
तुम्हारे प्यार की
आओगे किसी कश्ती पे होके सवार
छू जाएगी
प्रेम की कोई लहर मुझको
धड़केगा फिर दिल मेरा
तेरे प्यार में..
दौड़ कर लिपट जाऊँगी
एक फिर तेरे आग़ोश में!

जीत

तुमसे कैसी रेस लगाऊँ
हार जीत की बोलो तुम
तुमसे कैसे आगे जाऊँ
ऐसा कर क्या मैं खुश रह पाऊँ बोलो तुम।

न आगे मुझको बड़ना है तुमसे
न है मेरी मंशा ऐसी कोई
मैं तो बस इतना चाहूँ
हर जन्म में साथ तेरा ही चाहूँ।

तुमसे मैं जीत नहीं
बस प्रेम और समर्पण चाहूँ
तुम्हारी ख़ुशी में खुश रह मैं
उसमें ही अपनी ख़ुशी चाहूँ।

न कोई अभिलाषा मेरी
न है कोई चाहत मेरी
हार जीत के खेल में
सदा मैं अपनी हार चाहूँ।

तुम्हारी जीत मेरी जीत होगी
जीत भी गई अगर तुमसे
इस जीवन के खेल में तो
सर्वस्व न्योछावर कर मैं जाऊँ

जीत के भी हार मेरी ही होगी
मैं तो दिल तुम पर वार चुकी
अब जीत हो या हार हो
सर्वस्व तुम पर मैं लुटाऊँ।

रोना-धोना

जीवन है सुख दुःख का रेला
फिर क्यों रोना-धोना जाना है अकेला
जहाँ सुख है दुख भी आएँगे
हम अकेले आए थे अकेले ही जाएँगे।

हरी भरी वसुंधरा को हमने कितने कष्ट दिए
फिर हम कैसे न दुःख पाएँगे
कामना करते सदा सुख की भूल जाते हैं
जो बोया है वही फल तो हम पाएँगे।

बाँटी अगर ख़ुशियाँ होती हमने
तो पाते सदा ही ख़ुशियाँ हम
उगला सदा ही ज़हर मुख से
फिर कहो प्रेम कैसे पाएँगे।

झुकना न सीखा कभी हमने
फिर झुका कैसे पाएँगे
किया न कभी मान किसी का
तो खुद मान कैसे पाएँगे।

अब पछताए क्यों भला
रोना-धोना क्यों करे भला
मान पाने के लिए करो सदा ही मान तुम
झुक जाओ जरा तो मान फिर तुम पाओगे।

करो सुरक्षा वसुंधरा की
स्वयं सुरक्षित हो जाओगे
मान तो क्या सम्मान सदा तुम पाओगे
जीवन ख़ुशियों से भर मालामाल हो जाओगे,..!

मैं और तुम

मैं और तुम जैसे..
जैसे दिया और बाती
जैसे चाँद और चाँदनी
जैसे सूर्य और प्रकाश
ये सब एक दूसरे के हैं पूरक
हम भी पूरक हैं एक दूसरे के
दिया बाती के बिना अधूरा है
बाती के जलने से ही दिया का महत्व है
जब तक चाँद न हो, चाँदनी नहीं
सूर्य के बिना प्रकाश नहीं
तुम्हारे बिना मैं नहीं, मेरे बिना तुम नहीं
सबका अलग अलग है महत्व
पर अधूरे हैं सब
एक दूसरे के साथ बिना
तुम हो तो मैं हूँ, मैं हूँ तो तुम,
तुमसे है वजूद मेरा
तुम हो आधार मेरा
मैं हूँ तुम्हारी आधार
जिस्म दो एक जान हैं हम
तुम बाँसुरी हो तान है हम!

अंधकार

अंधेरे से निकलो बाहर
अपने अरमानो को करो पूरा
अपने अंदर के अंधकार को दूर करो
उठो
भरा है तुम्हारे अंदर
उजियारा
उसे बाहर निकालो
रोशन करो अपनी दुनियाँ
अपनी चाहतों को करो पूरा
भरो ऊँची उड़ान
बहुत कुछ है अंदर दबा
उस ग़ुबार को निकलो
जीवन भर दो रोशनी से अपना
तुम्हारे अंदर
वो क्षमता है
अपने अंदर के सूरज को
यूँ दबा के न रखो
बिखेरने दो उसे उजियारा
करने दो ज़िंदगी के सपने पूरे
जो देखे थे कभी!

शक

जहाँ शक का
बीज पनप जाए
वहाँ रिश्तों में
दरार आना निश्चित है
शक भाई भाई में
पति पत्नी में
माँ बेटे में
पिता पुत्र में
दोस्ती में
हर रिश्ते में
कड़वाहट भर देता है
ये नागपाश की तरह जकड़ लेता है
उससे निकल पाना
बहुत मुश्किल होता है
जब शक का बीज
घर कर जाए तो
बड़ी मुश्किल से बच पाते हैं रिश्ते
इन्हें टूट कर बिखरने से बचाने के लिए
मन में जो है उसे कह देना अच्छा
बीज पनपने के पहले ही उसे रौंद देना अच्छा!

सुन्दर

वो सुन्दर सी मुस्कान
जो सजती है
तुम्हारे चेहरे पर
मोह लेती है सबका दिल
बना लेती है
एक पल में ही अपना
करती है दिल को घायल
वो आँखों की शरारत
जो झलकती है
तुम्हारी आँखो में
करती है मदहोश
एक अजब सा आकर्षण है उनमें
तुम्हारा खूबसूरत व्यक्तित्व
सबसे निराला
करता है सबको आकर्षित
कुछ कर गुजरने की तुम्हारी चाहत
सबसे निराली है तुम्हारी अदाएँ
जो करती हैं सबको चकित

बुलबुला

आसमाँ की ऊँचाइयाँ छूना चाहती हूँ
पानी के बुलबुलों को थामना चाहती हूँ
क्योंकि मेरी आशाएँ आकांक्षाएँ बहुत ऊँची हैं
उन तक मैं पहुँचना चाहती हूँ
अपनी हर ख़्वाहिशों को पूरा करना चाहती हूँ
मैं इन पानी के बुलबुलों की तरह जी तो हूँ
मेरा छोटा सा मन इन्हें पकड़ना चाहता है
पर ये जानता भी है कि
इन्हें पकड़ना आसान नहीं इन्हें छूते ही
बिखर जाएँगे ये
पर एक कोशिश तो कर ही सकती हूँ
क्या हुआ अगर मैं इन्हें पकड़ नहीं सकती
इन्हें थाम बिखरने से बचा तो सकती हूँ
मैं नन्ही परी
नदिया कि धार की तरह अविरल बह तो सकती हूँ
बहने दो मुझे
कर लेने दो वो सब जो मैं करना चाहती हूँ
न छीनों मेरा बचपन, जी लेने दो अपनी ज़िंदगी
मन में निश्छल भाव लिए आसमाँ की ऊँचाई को
छू लेने को बैचेन मेरा कोमल मन
तितली बन उड़ना चाहता है
न काटो पंख मेरे
अपनी हर इच्छाओं को पूरा करने दो
न करो मेरी इच्छाओं का दमन
बुलबुले सी है मेरी ज़िंदगी
आज यहाँ हूँ कल और कहीं

गुरु

गुरु बिन ज्ञान न मिले कहीं
बिन ज्ञान न होए पूछ कहीं

माँ सम न कोई गुरु मिले
फिर क्यों तू इधर उधर फिरे

मात पिता है प्रथम गुरु हमारे
संस्कारों से भरे जीवन को हमारे

दूजा गुरु मिले पाठशाला में
जो देते ज्ञान बाहरी हमें

मीत सखा से मिले प्रीत सदा
ये हर मुश्किल में साथ दे सदा

जीवनसाथी से अच्छा न मीत गुरु न कोई
फिर चिंता किस बात हमें होई

सास सम न कोई गुरु
घर गृहस्थी की ये ही हैं गुरु

संकोच

खाने पीने में करो न कोई संकोच
कहने में झिझको तुम
जो मन में है वो कह दो तुम
न किसी से गिला रखो
न रखो कोई शिकवा
न हो किसी के लिए बैर भाव मन में
न दो तुम किसी को कभी धोखा
जो मन में है कह डालो
मन में रख गाँठ न बाँधों
ज़िंदगी है चार दिन की
क्या रखा है
फ़िज़ूल की बातों में
इसकी इससे
उसकी उससे कहने में
कोई सार नहीं
कहना जिससे उसकी बातें
कहो उसी से
कह कर बेहिचक सारी बातें
दूर करो गिले शिकवे
न रखो कोई मन में बोझ
जी लो ज़िंदगी जी भर के

परिवार

कुछ सकुचाई सी, कुछ शर्माई सी
आई तुम्हारे आँगन
प्रेम प्रीत के बंधन में बंध
डरी हुई थी, सहमी हुई थी
आई जो एकल परिवार से थी
बहुत बड़ा परिवार था तुम्हारा
यही सोच मैं डरती थी
कैसे निभा पाऊँगी मैं
डर हुआ थोड़ा कम
जब मिला साथ अपनों सा
मिला प्यार बिलकुल
बाबुल के घर जैसा
सासु माँ तो माँ जैसी थीं
तुमसा सखा मिला मुझे
देवर बिल्कुल भाई से थे
जिठनी बहना जैसी
धन्य हुई मैं पाकर साथ तुम्हारा
हुई झिझक फिर थोड़ी कम
घुलमिल गई जब मैं हमारे घर परिवार में
डोलती गुड़िया सी मैं तुम्हारे आँगन में
माँ पापा की कमी कभी न महसूस होने दी
सहे नाज़ नख़रे सभी
अब न कोई झिझक थी न था कोई संकोच
जब मिले हमारे दिल दिल से
हो गए हम जब एक
मैं तुममें तुम मुझमें समा
हो गए सदा सदा के लिए एक

आकांक्षा

कहते हैं हर मन्नत पूरी नहीं होती
हमारा जीवन अनंत
आकांक्षाओं, अभिलाषाओं से भरा है
एक इच्छा के पूरे होते ही दूसरी तैयार होती है
कभी मंदिर तो कभी मज्जिद में
आँचल पसारे खड़े होते हैं कामना पूर्ति के लिए
कई बार चढ़ावे मंदिरों मज्जिदों में चढ़ते हैं
भगवान भी थक जाते हैं
भक्तों की कामना पूरी करते करते
वो भी उलझनों में कई बार फँसते हैं
मौत द्वार पर खड़ी है
कामना ज़िंदगी की लोग करते हैं
कुछ तो मौत को गले लगाने तड़पते है
भगवान भी मुश्किल में फँस जाते हैं
जिसे मौत आनी है वो आएगी ज़रूर
ज़िंदगी दे उन्हें वो सजा कैसे दे सकते हैं
तो कहीं किसी को बेमौत मार
अपनों से कैसे अलग कर सकते हैं
किसी को धन की चाहत, किसी को पुत्र की कामना
कोई अमीरी में कष्ट झेलता
तो किसी का ग़रीबी से बुरा हाल
हर किसी की अपनी इच्छाएँ,कामनाएँ लालसाएँ हैं
कुछ पूरी होती हैं कुछ अधूरी ही रह जाती हैं
ज़िंदगी है छोटी सी, चाहते हैं बड़ी-बड़ी
वक्त है सभी के पास कम यहाँ
कर सको तो कर लो पूरी अपनी इच्छा अभिलाषा कामना

लाज

लाज का घूँघट ओढ़े
शर्म हया साथ लिए
डोली चढ़ आई थी
प्रेम और समर्पण से सँवारा घर द्वार
घूँघट किया या नहीं
मायने इसका कुछ नहीं
किया सबका सम्मान
रखी आँखों में शर्म
न बोले ऊँचे बोल कभी
जिया सदा जीवन सादा ही
सेवा करी माता पिता की
रहे सदा उच्च विचार
न कभी दुखाया दिल किसी का
न किया किसी का अपमान
भले ही पीए अपमान के घूँट
पर न निकली मुँह से उफ़्फ़
पाया हमेशा प्यार सभी से
चाहे बच्चे हों या बड़े
बस यही लाज की चादर ओढ़े
बिदा हो जाऊँ दुनिया से बाहों में तेरे

फुलवारी

मेरी छोटी सी फुलवारी
बड़े प्यार से सहेज रखा है इसे मैंने
एक एक फूल को
अपने प्रेम और समर्पण से सींचा है
ताब कहीं ये बगिया महकती है
इसे संभाल रखना
आसान न होता
अगर एक तुम्हारा साथ न होता
मेरे प्रेम और समर्पण के साथ ही
तुम्हारा कठोर परिश्रम भी है
हम दोनों ने मिलकर
अपनी बगिया को संस्कारों से
पोषित किया है
हमारे अटूट प्रेम और साथ से
हमारा गुलिस्ताँ महकता है
इस प्रेम और समर्पण से
बने पवित्र रिश्तों को
कभी मुरझाने न देंगे
सदा अपने प्रेम से सींच
इन्हें हरा भरा रखेंगे!

राधे कृष्णा

जहाँ कदम की डाल हो
नीचे बैठे मेरे गोपाल हों
संग में राधा रानी हो
पंखा झले गोप ग्वाल हो
रखा माखन का थाल हो
भोग लगाते मदन गोपाल हों
ख़ूब सजा चौपाल हो
संग बलदाऊ सा भाई हो
सखा सुदामा जैसा हो
प्रेम की जहाँ वर्षा हो
बाँसुरी की धुन बजती हो
यमुना जी तट हो
जहाँ वंशीवट हो
ही कृष्ण कन्हाई तुम मेरे सामने हो
यही हमारी विनती है
जब प्राण हमारे निकले तो
सामने हमारे राधा कृष्ण हो!

आकाश

ये तारे आकाश में
टिमटिमाते हैं
ये अंबर ही तो
इनका घर होता है!

जब भी सूरज निकलता है
ये जाकर के छुप जाते हैं
चाँद के साथ ही रहते
उसके आते ही छा जाते हैं!

जब छाते हैं घने बादल
ये टिमटिमाना भूल जाते हैं
कड़कती है जब बिजली
चाँद के आग़ोश में छिप जाते हैं!

खेलते हैं आँख मिचौली
ये चाँद और तारे
चोली दामन का साथ
इनका सदा ही रहता है!

अभिलाषा

मन की अभिलाषाएँ अनंत अपार है
मन पर किसी का वश नहीं
मेरी अभिलाषा बस यही
बार बार मन कहता है रुक जाओ बेटी
कुछ और दिन साथ बिताओ हमारे
पर फ़र्ज़ ये कहता है
नहीं तुम जाओ बेटी
अपनी सेवाओं से
हर रोगी को रोग मुक्त कर
अपना फ़र्ज़ निभाओ तुम
माँ हूँ न इसीलिए कभी कभी
रोक नहीं पाती हूँ मन को
पर ये भी चाहत नहीं मेरी
कि अपने कर्तव्यों से
पीछे हटने कह दूँ तुमको
बस एक यही अभिलाषा है
एक अच्छी डॉक्टर बन
करो नाम रोशन तुम
दिल से दुआ यही है, सदा आशीष यही है
अपने हर कर्तव्य बखूबी निभाओ तुम!

मार्गदर्शन

गुरु से ज्ञान मिला
गुरु से ध्यान मिला
गुरु के साथ से
जीवन सफल हुआ

गुरु ने मार्गदर्शन दिया
हर मुश्किल काम
सरल हो गया
राहें आसान हो गईं

गुरु ने क्रोध को
पीना सिखाया
हर हम में
खुश रहना सिखाया

गुरु ने दर्द सहना सिखाया
भक्ति भाव का ज्ञान
गुरु से पाया
गुरु कृपा से जीवन में हर सुख पाया!

महक

आज आँगन में लगा मोगरा
महका रहा था घर को
फैली थी उसकी ख़ुशबू
घर के हर कोने में
मानों याद दिला रहा हो
मैं भी हूँ तुम्हारी बगिया में
जिससे लगता है तुम्हारा आँगन
सुंदर और ख़ुशबूदार भी
महकते गुलाबों और रजनीगंधा के बीच है
मेरी अलग पहचान भी
प्रभु के चरणों में जब चढ़ाया जाता
हरि को प्रिय मैं लगता
कभी गोरी के बालों में
वेणीं बन महक जाता हूँ
हर रूप रूप में अलग पहचान
मैं बना जाता हूँ!

माहौल

ख़ुशनुमा माहौल है
मौक़ा है शादी का
न बैंड है न बारात है
फिर भी खुश है सभी
अपनों का साथ है
अपनों की सुरक्षा है
प्रेम है आशीर्वाद है
क्या हुआ जो मामा मौसी नहीं
नहीं है कोई भैय्या दीदी
पर प्रेम और स्नेह उनका
दे रहा सुकून है
हम सुरक्षित, वो भी सुरक्षित,
कुछ वातावरण ख़राब है
यही समय की माँग हैं
फिर भी हैं खुश सभी
यही सोच
जो होगा अच्छा होगा
जो हो रहा है
शायद यही हमारी नियति है
सच कहा है किसी ने
समय बड़ा बलवान है

माँ कहती है

अक्सर माँ कहती है
सब हो जाएगा, तुम चिंता मत करो
जब तक हम हैं
तुमको क्या ज़रूरत है
बहुत दिनों में आई हो
जाओ दो घड़ी बैठ लो पापा के साथ
सब हो जाएगा कह
काम में लग जाती हैं
सच माँ का ये कहना
आज भी अच्छा लगता है
उनका साथ कितना अच्छा लगता है
घंटों बैठ बातें करना
रात रात भर जागना
सुबह देर तक सोना
फिर गरमा गरम पराठे
वो भी माँ के हाथ के
सच पराठे के नाम से
आज भी मुँह में पानी आ जाता है
माँ का साथ क़ितना प्यारा लगता है
माँ के हाथ का खाना
क़ितना अच्छा लगता है

मोरपंख

मैं कितना खुशनसीब हूँ
कि सजता हूँ
कान्हा के माथे पे
लिखी रामायण, गीता
मेरे ही पंखों से
परिशुद्ध प्रेम का
प्रतीक हूँ
मुझे देखते ही
लोगों का मन
प्रसन्न हो जाता है
बच्चे भी मेरा नाच देख
ख़ुशियों से भर जाते हैं
फिर क्यों न इतराऊँ मैं
मेरे कान्हा जब
हर वक्त मुझे
अपने पास ही रखते हैं
सावन के आते ही
बहार आ जाती है
मेरे मिलन की घड़ियाँ
पास आ जाती हैं

रिमझिम फ़ुहार

मन मयूर नाच उठता है
जब जब देखती हूँ तुम्हें
सावन की रिमझिम फुहारों में
मन भीग भीग जाता है
जब जब देखती हूँ तुम्हें
झरोखे से बैठ
मन खिल उठता है
मिलने को बेचैन हो उठता है
लगता है दौड़ कर
लगा लूँ गले तुमको
कह दूँ वो सारी बातें
जो मन में दबी हैं
कहने को आतुर हूँ जो तुमसे
डरती भी हूँ
इस बात से कि कहीं खो न दूँ तुम्हें
मन में उमड़ते घुमड़ते कई सवाल
रोक लेते हैं मेरे पग को
बढ़ने से आगे
पर क्या करूँ
मेरा मन है आतुर
मिलन को तुमसे
ख़्वाबों में मोर पंखी रंग सजे है
बस और नहीं होता सब्र
दिल मचलता है मिलन को
दुनियाँ की सारी रस्में कस्में छोड़
आ रही हूँ मैं अब मिलने को तुमसे

औढ़र दानी

ओ भोले बाबा
जरा तुम आना
संग गौरा को लाना
डमरू तुम बजाना भोले नाथ रे, ओ भोले नाथ रे,..

ओ भोले बाबा
तुम हो औढ़र दानी
संवारते बिगड़े काज हो
नैय्या खड़ी हमारी बीच मझदार रे
जरा आके तुम पार लगाना रे, ओ भोले नाथ रे,..

ओ शिव शंभु
तुम हो दीनों के नाथ
करते हो पूरन काज
भरते हो झोलियाँ सबकी नाथ रे
अर्ज़ी हमारी भी सुन लेना शंभु नाथ रे, ओ भोले नाथ रे,..

ओ भोले बाबा
दर्शन तुम दे जाना
संग नंदी और गणपति को लाना
कृपा बरसाना ओ भोले नाथ रे, ओ शम्भु नाथ रे,..

भीड़

मैं भीड़ में भी
अकेला रहूँ मंज़ूर है मुझे
मैं नही चाहता
इस वक्त
बनूँ उस भीड़ का हिस्सा
जो कल दे जाए
मेरे किसी अपने को दर्द का हिस्सा
मैं भीड़ में भी
अकेला रहूँ मंज़ूर है मुझे
नहीं बनना मुझे
कोई बादशाह या ख़लीफ़ा
चंद तस्वीरें खिंचवा के
नहीं करना
अपना नाम दर्ज मुझे
किसी दान दाता में
मैं भीड़ में भी
अकेला रहूँ मंज़ूर है मुझे
नहीं देख सकता
किसी अपने को
अपने से दूर होते हुए नहीं देख सकता
नहीं देख सकता मैं उन्हें तिल-तिल मरते
बिलखते हुए
आज भी इंसानियत बाक़ी है मुझमें
नहीं देख सकता
किसी का घर उजड़ते हुए
मैं भीड़ में भी अकेला रहूँ मंज़ूर है मुझे

ताप

जिस तुलसी की हम
पूजा करते हैं
माँगते हैं वर
सुख-समृद्धि का
अन्न-धन,अमर सुहाग का
जरा कभी किसी ने सोचा है
सूरज की तेज तपन सह
देती हैं वो वरदान हमें
जल चढ़ाते चढ़ाते
कई बार ज़मीन का ताप
हम स्वयं नहीं सह पाते
कई बार आनन फ़ानन
कर लेते पूजा
क्योंकि इस ताप में
जलते हैं पग हमारे
जरा सोचो
माँ तुलसी की पीड़ा
महसूस करो उनके उस ताप को
जो वो सहती हैं
साँझ ढले तक
अपनी संतनो के हरने संताप को

तपन

ये जेठ की तपती दुपहरिया
लए जात है प्राण हमारे
ऊपर से लग गए
ये नौ तपा बैरी हमारे

चूल्हा चौका से फ़ुरसत
मिलत नई या
चूल्हा फूँकत फूँकत
हो गए आधे प्राण हमारे

न दिन में चैन मिले
सूरज की तपन से
न रात में आराम हमें
के बैरी मच्छर काट काट
खाए जात प्राण हमारे

तंनक फंखा में बैठे नई कि
बेर बेर हो जात है
जा बिजुरिया गुल देखो
टप टप बहे पसीना हमारे

सास ननद मज़े से नींद लेवे
सारी दुपहरिया हमसे काम करावे
गेहूं और चावल की बोरी तो
लए जात प्राण हमारे

मन में हो लगन

जीवन में कोई भी काम
कठिन नहीं होते
कोई रास्ता मुश्किल
नही होता
अगर मन में
कुछ पाने की चाह हो
एक आस हो
श्रद्धा और विश्वास हो
मन में हो लगन
तो कोई भी काम
नामुमकिन नहीं होता
रास्ते भी सहज
सरल से लगते हैं
काँटों भरी राह में
चुभन नहीं
अपितु फूलों से सजी
राहें लगती हैं
हर ख़्वाब पूरे हो जाते हैं
सब कुछ सहज सरल हो जाता है
बस मन में लगन होना चाहिए
कोशिशें अक्सर कामयाब होती है
पर तभी
जब हम पूरे मन से कोई कार्य करते हैं
लगन,विश्वास और जज़्बा होना चाहिए
फिर मंज़िल दूर नहीं
जब कामयाबी हमारे पास हो

महामारी

जकड़ी है आज माँ भारती
भीषण महामारी से
पर बच्चों ने उनके हार न मानी है
सब अपने अपने फ़र्ज़ निभा रहे यहाँ
चाहे डाक्टर हो या नर्स
सफ़ाई कर्मचारी हो या सुरक्षा कर्मी ही
दिन रात दे रहे सेवाएँ हैं
ऐसे में हार न सृजनकर्ताओं ने भी मानी है
उन सबने भी कलम उठा
रच दी नई कहानी है
इस आपातकाल में लोगों की
छुपी प्रतिभाएँ भी बाहर निकली हैं
किसी ने कलम
तो किसी ने रंगों को साधन बना
रच दिया इतिहास है
इन सबसे मिल कर
सजी आपातकालीन सृजन फुलवारी है
किसी ने लिखे क़िस्से कहानी
किसी ने लिखी प्रेम की पाती है
किसी ने पिरोया अरमानों का मोती शब्द रूप में
किसी ने लिखी अमिट कहानी है
किसी के सपने हुए साकार
इस सृजन फुलवारी से
किसी के मन के निकले
उद्गार इस सृजन फुलवारी से
जो बने कविता,गीत या छंद

बर्ताव

आज आसमान साफ़ है
प्रकृति की छटा
देखते ही बनती है
सारी धरा का व्यवहार बदल गया है
नदियाँ खिलखिला रही हैं
स्वच्छ और निर्मल
हो गया है इनका जल
कलकल करती
सर्वत्र निश्छल हो बह रही हैं
दिखने लगे हैं
आज वो पहाड़
जो सदियों पहले
दिखा करते थे दूर से ही
पक्षियों का
बर्ताव भी बदल गया है
मस्त गगन में
उन्मुक्त हो उड़ रहे हैं
जहाँ लुप्त हो गए थे
कुछ पक्षी
आज फिर समंदर किनारे
दिखने लगे हैं उनके झुंड
सारी धरा खुश है
प्रकृति की अनुपम छटा भी
देखते बनती है
सब कुछ बदला बदला सा
लगने लगा है

व्यवहार

कैसा समय आ गया है न
आज हर किसी का व्यवहार
बदल गया है
जहाँ कल तक
एक दूसरे में
जान बसती थी
आज उसी जान की ख़ातिर
हमने एक दूसरे से दूरी बना ली
आज अपनों से ऐसा बर्ताव
अच्छा नहीं लगता
पर ये मजबूरी है
जान बचाने के लिए
दूर रहना ही होगा
अपनों से ही
ऐसा नहीं कि
प्रेम नहीं होगा
वो निश्चित होगा
पहले से भी अटूट होगा
दूर रहकर भी
साथ तो होंगे
साथ ही सुरक्षित भी होगा
जीवन हमारा
अपनों की ही ख़ातिर
अपनों से ये दूरी अच्छी है

मज़दूर

मैं मज़दूर हूँ
मजबूर नहीं
न ही जीवन में है आराम
सलामत हैं
जब तक मेरे हाथ
जिनसे कर सकता हूँ मैं श्रम
पाल सकता हूँ परिवार
अधिक न सही
पर दो जून की रोटी
खिला सकता हूँ
आज महामारी के चलते
भले ही बंद है मेरा काम
नहीं मिलती मजूरी भी मुझे
पर मैं ख़ाली बैठ
नहीं सकता
करूँगा कुछ न कुछ करूँगा काम
मैं मज़दूर हूँ
उठाता हूँ बोझ
करता हूँ कठिन परिश्रम
तब मिलता है तुमको आराम
चाहे हो खेतों में काम
बनाना हो घर मकान
बने इमारतें ऊँची ऊँची
जिसमें करते बैठ सब काम
बिन मेरे कुछ भी सम्भव नहीं
मैं न करूँ गर काम, तुम हो जाओगे परेशान

कुंभकार

बड़े प्यार और जतन से
मिट्टी को आकर दे
बनाता है कुंभकार घड़े जब बनाता है
यही सोचता है
जब इस घड़े पानी कोई पिए
दे जाए ठंडक उसके मन को
जब प्यास बुझेगी
स्वयं ही एक दुआ निकलेगी
उसके मन से
जो कर जाएगी मेहनत सफल
उस कुंभकार की
कही सजेंगे यही कलश
मंडप में शादी के
तो कहीं गृहप्रवेश में
सजेंगे किसी के द्वार
जो भर जाएँगे सबके भंडार
जलेगी जोत कहीं
माँ अम्बे की मडिया में
जगमग जगमग
तो कही ये मिलेंगे किसी पनघट
जहाँ होगी राधा संग सखियों के
फोड़ेंगे मटकी नटखट
धन्य होगा तब घड़ा
जब माखन भरा
मटके का खाएँगे कान्हा नटखट

चार दीवार

ये दिन हमेशा नहीं रहना
जब ये गुज़र जाएँगे
याद करोगे इन दिनों को
जो बिताए है
अपने परिवार के साथ
क्या हुआ
अगर हम घरों के अंदर हैं
हम कैद नहीं
सुरक्षित हैं
अपनों के साथ हैं
ऐसे कहाँ
रह पाते थे कभी हम
सोचो ज़रा
क्या कभी भी
बिताया था हमने
पूरा एक दिन भी
यूँ ही परिवार के साथ
याद करोगे तो भी
याद न आएगा
वो एक दिन
पर ये साथ बिताए दिन
हमेशा रहेंगे सभी की स्मृति पटल पर
क्योंकि
साथ है अपने परिवार के
ख़ुश हैं चार दीवारों में भी अपनों के साथ

खोज

खोजना मुझे अपने अंदर
छुपी हुई प्रतिभाओं को
खोजना है मुझे
स्वयं में स्वयं को
खोजना मुझे उसे
जो अनंत काल से
समाहित मेरे अंदर शक्तियाँ
जो शायद अब क्षीण हो चली
तप और ध्यान से पाना है
उन्हें फिर से खोज रही हूँ
अपने गुरु आश्रम को
करना है परिश्रम
कठिन है मार्ग
पर मुश्किल कुछ भी नहीं
अंदर है तीव्र इच्छा शक्ति
पहुँचने की वहाँ
आशीष रहा गर साथ
गुरुवर का मेरे
तो राह भी होगी सरल
होगी मेरी खोज पूरी
जिस दिन होगा मेरा
साक्षात्कार
उस परमसत्ता से
जो हम सबसे परे
कहीं अनंत में विलीन है
उस दिन सार्थक होगा मेरा जीवन

पढ़ाया था

जो तुमने
जो सिखाया सीख लिया
कुछ तुमने पढ़ा दिया
कुछ हमसे छुपा लिया

पढ़ लिया
हमने
दिल को तुम्हारे
जो तुम्हारे दिल में
था लिखा

तुमने पढ़ाया कुछ
सिखाया कुछ
हमने पढ़ लिया
जो पढ़ना था
लिखा था जो दिल में तुम्हारे
जो तुमने न दिखया हमें
न पढ़ाया हमें
पढ़ना था तो पढ़ लिया
बिन कहे समझ लिया

कविता मेरे नाम की

अ - अदिति मेरा नाम है
आत्मसम्मान से जीती हूँ
दि - दिल से प्रेम सबसे करती हूँ
दिखावे में न जीती हूँ
ति - तिरस्कार किसी का करती नहीं
सम्मान सभी का करती हूँ

अपने नाम के अर्थ को सार्थक
किया है मैंने
प्रकृति है अर्थ नाम का
जुड़ी हूँ धरा से मैं
प्रेम प्रकृति से करती हूँ
छोटों से प्रेम
बड़ों का सम्मान
सदा मैं करती हूँ
स्नेह और समर्पण से
बाँधे सबको रखती हूँ
सुन लेती हूँ सभी की
कभी सुना भी देती हूँ
अंदर मन में कुछ रखती नहीं
सत्य का साथ मैं देती हूँ
इसीलिए शायद
कभी कभी कुछ लोगों को
मैं खटकती हूँ
फिर भी हँस कर जीती हूँ
क्योंकि प्रेम सभी से करती हूँ

फूलों की तरह

फूलों की तरह खिलना
चिड़ियों की तरह चहकना
फल से लदे पेड़ों से झुकना
समंदर से देना
गुलाब से काँटों में खुश रहना
महकना और महकना
प्रकृति से हम बहुत कुछ सीखते हैं
भोर की पहली किरण के साथ ही
खिलने वाले फूल हमें ख़ुशबू तो देते है
मगर बहुत कुछ सिखा जाते हैं
नदियाँ कलकल बहती है
कभी चट्टानों तो कभी
ऊबड़ खाबड़ रास्तों से होकर गुजरती हैं
सिखा जाती हैं
जीवन के हर सुख दुःख सहना
गुलाब काँटों के बीच खिलता है
जीवन की कड़वी सच्चाई से अवगत कराता है
फूलों से खिलना सीखो
क्योंकि हमारे चारों ओर
अच्छे और बुरे दोनों लोग हैं
उनके बीच हमें फूलों सा खिलना है
कमल कीचड़ में खिलता है
भगवान के चरणों में चढ़ता है
ठीक वैसे ही हमें भी सदा खिला खिला रहना है
जीवन में मुस्कुराना है फल से लदी डाल की तरह
नम्र और सदा झुक कर सबका प्यार पाना है

शाम का इशारा है

चाय पर इंतज़ार तुम्हारा है
ये सुहानी शाम
तुम और मैं
बगीचे में बैठ
कुछ देर बातें ही कर लेते हैं
चाय तो सिर्फ़ एक बहाना है
कम से कम
हम इस चाय के बहाने ही सही
दो घड़ी साथ बैठ लेते हैं
कुछ तुम अपने मन की
कुछ हम अपने मन की
दो बात कह लेते हैं
कुछ पल के लिए ही सही
हम कुछ वक्त साथ बिता लेते हैं
ये शाम भी बड़ी सुहानी लगती है
इशारों में बहुत कुछ कह देती है
आसमाँ की लाली
सूरज की तपिश कुछ
कम हो जाती है
चाँदनी भी छिटक
शीतलता दे जाती है
शाम का इशारा है
सुकून के कुछ पल दामन में समेट लो
अब वक्त कहाँ हमारे पास ज़्यादा है

ये ख़ाली सोफे

ये ख़ाली सोफ़े शिकायत करते हैं कोई आता नहीं...
ये ख़ाली पड़े सोफ़े
कहते हैं अक्सर मुझसे
कोई आता नहीं आजकल
लॉकडाउन के चलते
इनकी शिकायत सही भी है
पहले चहल पहल रहती थी
आज सूनी पड़ी रहती है बैठक
जहाँ कभी महफ़िलें सजा करती थी
उदास सोफ़े की शिकायत सुन
क़रीने से टेडी सजा दिए हमने
अब घर के सोफ़े ख़ाली नहीं दिखते
हर कोने में टेडी
मुस्कुराते हुए दिखते
घर भी भरा भरा लगता है
जब बैठते हैं सोफ़े पे
थोड़ी गपशप
टेडी से कर लिया करते है
मन भी बहल जाता है हमारा
अब सोफ़े भी शिकायत नहीं किया करते

माँ तुमसे जो सीखा है

माँ तुमसे जो भी पाया
तुमसे जो भी सीखा
उस ज्ञान के प्रकाश को
सहेज रखा है मैंने
एक किताब की तरह
जब भी मुश्किल में होती हूँ न
बस कुछ पन्ने
उलट पुलट लेती हूँ
मिल जाता है हर समस्या का हल
मानों मिल जाता है
थोड़ा सुकून थोड़ा सा चैन
जब काँटों भारी राह
पर पड़ता है चलना
ताब पापा आपकी बातें
आपकी सीख जो आपने हमें थी
जिन्हें सम्भाल रखा था
मैंने एक किताब की तरह
अंधेरे में रोशनी दे जाती हैं वे बातें
बड़े काम की हैं ये बातें
कितनी सरलता से
राह मिल जाती है

डगर जो काँटों भरी थी
पथरीली सी जो नज़र आती थी
वो भी आसान हो जाती है
दोनों की दी हुई शिक्षा ही
आज हमारे काम आती है
जिसे मैंने कभी अपने
मन के किसी कोने में
लिख रखा था आज वो
किताब ही मेरे काम आती है
हर सुख दुःख में
मैं ख़ुशियाँ ढूँढ लाती हूँ
जब जब मैं किताब के पन्ने
पलट कर देखती हूँ
उदास चेहरे पे मुस्कान ले आती हूँ

कलम

हाँ
तुमसे ही तो पाया है
इतना ज्ञान
तुम्हारी ही रोशनी तले
कलम उठाने का साहस पाया है
तुम्हारी ही आग़ोश में रहकर
अपने विचारों में
इतनी दृढ़ता का पाई है
तुमसे ज्ञान प्राप्त कर ही
इतनी ऊँचाइयाँ पाई है जीवन में
हर अच्छे बुरे की पहचान
तुमसे ही तो सीख पाई हूँ
तुम ही ने सिखाया है
किताब का कोई भी पन्ना
बेकार नहीं होता
हर पन्ने में कोई न कोई
ख़ास बात छिपी होती है
मेरे जीवन की किताब भी
कुछ ऐसे ही है
जीवन की किताब का हर पन्ना
कोई न कोई सबक़ ज़रूर सिखा देता है
देर से ही सही कभी फुर्सत में
अपने पन्नों को पलट कर देखा
कई ख़्वाब आज भी अधूरे दबे पाए मैंने
कई सुखद एहसास से भरे थे
तो कई ज़िंदगी की उलझनों से

भरे पड़े थे
कई पन्ने सहेज कर रखे थे
ये वो पन्ने थे जो जीवन के
अनेक उतार चढ़ाव से भरे थे
आज समझ पा रही हूँ इन सबको
कैसे सामंजस्य बैठा कर
किया है मैंने व्यवस्थित जीवन
कहीं राह काँटों भरी थी
तो कहीं सुख से भरी हुई
तो कोई दुखों की डगर थी
जिन सबको मैंने हँस कर पार किया
कैसे मैंने अपनी जीवन की
किताब सँवार को लिया
ये सब कुछ ज्ञान
तुम्हारे प्रकाश से ही पाया है
तभी तो जीवन के हर मोड़ पर
स्वयं को सुरक्षित पाया है
ये सब जो मैंने तुमसे पाया है
इसे संभाल कर रखूँगी
विरासत में अपने बच्चों को
यही किताब फिर दूँगी
जिससे वो भी कभी डगमगाएँ न
किसी भी मुश्किल में घबराएँ न
तुम्हारी ज्ञान की रोशनी से सराबोर हो
अपने कर्तव्यपथ पर अनवरत चलते रहें
कभी कोई डगर कठिन आए भी तो
हौसले सदा बुलंद हों
काँटे भी फूल बन राहों में बिछ जाएँ
कठिनाइयों से घबराएँ न

सखा

हे कृष्ण!
तुमसे अच्छा न कोई सखा है
न शुभचिंतक कोई
तुम्हारे पास मित्र है सुदामा सा
राधा का प्यार है
खुश नसीब हैं हम
जो पाया हमने तुम्हारा साथ है
तुम मित्र हो मेरे
करती हूँ अंतरंग बातें तुमसे ही सारी
तुम हम राज हो
मेरे बालपन के सखा हो
न जाने कितनी बातें मैंने तुमसे कहीं है दिल की
जाने कितनी ही समस्याओं का
समाधान किया है तुमने
हर दुःख में हर सुख में साथ निभाया है
एक अच्छे मित्र की भाँति
हमेशा लड़खड़ाते कदमों को सम्भाला है
जब भी डगमगाई, विचलित हुआ मन
आकर धीरे से कानों में तुमने बुदबुदाया है
मेरी हर ग़ल्ती को तुमने ही तो सुधराया है
माँझी बन तुमने कश्ती को मझदार से पार लगाया है
क्या कहूँ कान्हा
हर कदम पे तुमने ही तो मेरा साथ निभाया है
कभी भाई तो कभी सखा बन हर वक्त साथ खड़े हो
मेरा संबल बढ़ाया है

अच्छा लगता है

अच्छा लगता है
अपनों के लिए कुछ करना
मुझे पता तुम्हें बहुत गुस्सा आता है
जब मैं कोई भी काम
तुम्हारी मर्ज़ी के बिना करती हूँ
मुझे पता है तुम्हें मेरी फ़िक्र होती है
इसीलिए तो तुम मुझसे रूठ जाते हो
पर सच मानों
मुझे तुम्हारे और बच्चों के लिए
काम करना तुम सबके काम के लिए डोलना
अच्छा लगता है
तुम कहते हो न जब
बैठ भी जाओ
थकती नहीं हो क्या
सुबह से लेकर रात तक
चकरी की तरह फिरती हो
तुम्हारे कदम थकते नहीं क्या
ये सुनना भी बड़ा अच्छा लगता है
तुम्हारी डाँट में भी प्यार छुपा होता है
मुझे मेरे बच्चों की फ़रमाइशें पूरी करना
अच्छा लगता है

क्योंकि मेरी ख़ुशी तुम सब हो
और तुम्हें खुश देख मैं खुश हो लेती हूँ
अच्छा लगता है
जब कोई चीज़ तुम्हें या बच्चों को
पसंद आ जाती है
तुम सबके चेहरे की मुस्कुराहट
मुझे सुकून दे जाती है
और हाँ जब बच्चे कहते है न
लाओ आपका हाथ चूम ले
सच मेरी मेहनत रंग ले आती है
सारी थकावट एक पल में
दूर हो जाती है
तुम्हारा मेरी फ़िक्र करना
अच्छा लगता है
तुम्हारा प्यार बड़ा सच्चा लगता है
तुम्हारा साथ बड़ा अच्छा लगता है

बिछोह

अपनों से बिछोह की पीड़ा
इस महामारी के चलते
कुछ अधिक हो गई
रोज़ किसी न किसी
अपने हो या पराए की
मृत्यु का समाचार आम हो गया
मगर उतना ही कष्टप्रद भी
कैसा समय आया है ये कि
अपने ही माता पिता को
बेटा अग्नि नहीं दे सकता
न मिलने की होती है परमिशन ही किसी हो
एक बार जो घर से गए
ठीक हो गए तो सब अच्छा है
नहीं तो वही
बच्चों के लिए अंतिम दर्शन बन गए
क़ितना दर्दनाक हो गया है
अपनों से बिछोह
असमय ही खो रहे हैं हम
अपनों को
न उम्र न कोई असाध्य रोग

फिर भी एक वायरस के कारण
ज़िंदगी से हार रहे हैं लोग
असमय बिछोह की पीड़ा
सहना आसान नहीं
कहीं छोटे बच्चे तो
कहीं बड़ों के ऊपर से उठ रहा साया
माता पिता का
कहीं छूटी नहीं
दुल्हन के हाथों की मेहंदी
और छूट गया पिया का साथ प्यारा
क़ितना दुखद होता है वो क्षण
जब उठता है
सर से माता पिता का साया
सच अपनों से बिछोह की पीड़ा
असहनीय असाध्य है
कहीं कोई डिप्रेशन में जा रहा है
तो कोई इन सबसे उबरने के
प्रयास कर रहा है

अन्नदाता कृषक

भोर हुए उठ जाती है कितना परिश्रम करती है
पति के खेतों में जाने से पहले सब संजो रख देती है
फिर जुट जाती घर के कामों में
जल्दी जल्दी काम निपटा घर के सारे
पोटली में रखती खाना
निकल पड़ती खेतों की ओर कितना ध्यान रखती है
तपती दोपहर में पेड़ की छाँव के नीचे बैठे
बड़े प्रेम से भोजन परोसती है
अंजुली भर पानी पी अपनी प्यास बुझाती है
कंधे से कंधा मिला अपने साथी का हाथ बटाती है
साँझ ढले घर को लौट फिर अपने नित्य कर्म में लग जाती है
किसान अपनी पत्नी के साथ मिल करता है अथक परिश्रम
बहाता है कड़ी धूप में पसीना
तब कहीं जाकर मिलता है हमें खाने को अन्न
ये हमारा अन्नदाता है करें सम्मान इसका
न करें कभी अन्न का अनादर
बड़ी मेहनत से बनता है ये
तब कहीं मिटती है
हमारी भूख
हमारी भूख मिटाने करता है ये
कड़कती धूप में परिश्रम

मुट्ठी भर अनाज

दे रहे मुट्ठी भर अनाज
जता रहे एहसान
मजबूर हैं
आज हर मज़दूर
झुकाए सर
लेने को अनाज
उठा रहा हाथ
जो हाथ कभी मेहनत से
कमा रहे थे
आज हुए लाचार
मदद कर इनकी
इतरा रहा आज इंसान
खींच रहा है सेल्फ़ी आज
जिनको वो
समझता था छोटा
आज उन्ही का दिया
बैठ खा रहा हर इंसान
वो गरीब ज़रूर है
मजबूर भी है आज
पर आज उनकी

मदद कर
कर रहे हो
सुरक्षित खुद को आप
क्योंकि
अगर ये मजदूर न होंगे कल
तुम वो अनाज
लाओगे कहाँ से
उन्ही की मेहनत से
बना,खा रहे हो तुम अनाज
और बाँट भी रहे हो
जो उनका था उन्ही को दे
इतरा रहे खुद पे आज
आज ये मज़दूर है
बेबस, लाचार है
इसलिए हर फ़ोटो में
रख रहे हो साथ
खुद को दानवीर
समझने वालों
जरा सोचो
कल गर ये होंगे
तो कहाँ से पाओगे तुम अनाज?

आशा से आकाश थमा

डोली सजी
रखी किनारे कह रही
निराश न होना
आएगा वह दिन भी जल्दी
जब बैठोगी
गोरी तुम डोली
चढ़ दुल्हा तुम्हारा
घोड़ी पर आएगा
ब्याह रचाने जल्दी
आशा से आकाश थमा न
तुम न हो उदास
मेरी प्यारी गोरी
निभाओगी तुम सारे नेंग चार
होगा पूरे विधान से विवाह
तनिक न मन में लाना
बुरे कोई विचार
यही सोच तसल्ली दे लेना
मन को अपने
जो हो रहा उसमें भी होगा कोई भला

कुम्हारन

कुम्हारन ने बनाया मटका
सभी की बुझाने प्यास
ये कृषक महिला
ओक में ले पी रही पानी
बुझा रही अपनी प्यास
करने मेहनत फिर
सज्ज हो रही
खेतों में दिन रात
मिल सके
दो जून की रोटी
मन में लिए विश्वास
तपती दुपहरिया में
हम सब को
मिल सके अनाज
इसलिए कर रही परिश्रम नि:स्वार्थ

छवि

छवि निरखि निरखि
भोले मैं तो हुई रे बावरी
एक पल नज़रें हटें न मुख से
प्रभु तुम्हारे
मनमोहक श्रृंगार किया है
रूच रूच मैंने तुम्हारा
नज़र न लग जाए अब कहीं हमारी
निस दिन पूजा मैं करती हूँ
भूल हो कभी तो क्षमा माँगती
दर्शन दे दो शिव शंकर
अब थक गईं
अखियाँ राह निहारती
भांग धतूरा का
भोग लगाती
आरती तुम्हारी
निस दिन गाती
ध्यान तुम्हारा ही करती हूँ
दिनभर शिव शिव भजती हूँ
अश्रु बहते हैं झर-झर
जब मोहक छवि मैं तुम्हारी देखती हूँ

चार दिवारी

ये दिन हमेशा नहीं रहना
जब ये गुज़र जाएँगे
याद करोगे इन दिनों को
जो बिताए है
अपने परिवार के साथ क्या हुआ
अगर हम घरों के अंदर हैं
हम कैद नहीं
सुरक्षित हैं अपनों के साथ हैं
ऐसे कहाँ रह पाते थे कभी हम
सोचो ज़रा
क्या कभी भी
बिताया था हमने पूरा एक दिन भी
यूँ ही परिवार के साथ
याद करोगे तो भी याद न आएगा
वो एक दिन
पर ये साथ बिताए दिन
हमेशा रहेंगे सभी की स्मृति पटल पर
क्योंकि
साथ है अपने परिवार के
ख़ुश हैं चार दीवारों में भी
अपनों के साथ

उदाहरण

आओ आज मनाएँ जन्मोत्सव
श्री हनुमान जी लला का
सब मिल भोग बनाएँ
श्री हनुमान जी लला का

गंगा जल दूध और पानी लाए
आओ मलमल आज नहवाएँ
आक के फ़ूल और सेंदुर लाए
मिल कर आज उन्हें हम चढ़ाएँ

दुखियों के दुःख हर्ता
मेरे प्यारे हनुमान जी लला हैं
आओ हम मिल कीर्तन गाएँ
भक्ति भाव से उन्हें बुलाएँ

बने उदाहरण राम भक्ति के
ऐसे श्री हनुमान जी लला को
हम सब मिल नित नित शीश नवाएँ
जय जय जय हनुमान मनाएँ

हम भी श्री हनुमान जी के जैसे
भक्ति भाव से हरि को मनाएँ
काम कुछ हम ऐसा कर जाएँ
एकता के सूत्र बंध हम मिसाल बन जाएँ,
आओ आज मनाएँ...

दृश्य

कितना मनोहारी दृश्य है
चारों ओर शांति ही शांति है
न मोटर गाड़ी का कोलाहल
न है कोई प्रदूषण
दिखाई देती है तो सिर्फ़
प्रकृति की अद्भुत छटा
पक्षियों का कलरव
जो मन को आनंदित करता है
नदियों का कलकल बहता पानी
मंत्र मुग्ध करती
कोयल की कूँ कूँ
पेड़ों पे बैठे तोतों का झुंड
जो हवा का झोंका आते ही
आसमान की ऊँचाइयाँ छूने
होता है आतुर
वो तालाब में बगुलों का उड़ना
मन आनंदित हो उठता है
जब घर की छत पर बैठ
देखतीं हूँ इस मनोरम दृश्य को
ये प्रकृति का अद्भुत नजारा
मंत्रमुग्ध कर जाता है

आओ दीप जलाएँ

आओ मिल हम दीप जलाएँ
श्रद्धा और विश्वास का
भर दें सारे जग को हम
सकारात्मकता और आत्मविश्वास से

ये केवल एक दीप नहीं है
ये है ऊर्जा का स्रोत
आओ बढ़ाएँ एक कदम हम
सकारात्मकता की ओर

दीप जलेंगे घर घर
होगा ऊर्जा का संचार
वातावरण होगा निर्मल
बनेगा प्राणाधार

जब दीप जलेंगे घर घर
होगा सुरक्षित जन जन
यमराज भी भाग जाएँगे
न फटक पाएँगे घर घर

जोत से जोत जलाओ
जन जन में जागृति लाओ
ख़ुशियाँ फैलाओ घर घर
देश में अमन और शांति लाओ

आत्मविश्वास

चाहे आ जाए लाख संकट
तुम न तनिक भी घबराना
आत्मविश्वास न कम होने देना
डट कर करना सामना तुम

आया है तूफ़ान ज़रूर
थमजाएगा ये एक दिन
कश्ती संभाल कर रखना अपनी
पार लग जाएगी एक दिन

अंधकार के बाद ही आता उजाला
रात के बाद ही होती है भोर
अमावस के बाद खिलती है चाँदनी
जल्दी ही आएँगी ख़ुशियाँ छटेंगे दुःख के बादल घनघोर

वो सुबह कभी तो आएगी

डरो नहीं
बढ़े चलो, बढ़े चलो
कर्तव्य पथ पर डटे रहो
अंधेरे में कोई
रोशनी की किरण
नज़र आएगी
जो दिखाएगी राह सभी को
करेगी मार्ग प्रशस्त
दूर होगा
देश पे आया संकट
वो सुबह कभी तो आएगी
जो रोशन करेगी ज़िंदगी
जैसे अंधेरे
देता है दीपक रोशनी
बस निराश न होना यारों
ज़िंदगी से अपनी
बस मिलकर
जोत से जोत, तुम जलाना

विनय

विनती है माँ शारदे
सदा रखना मेरे सिर पर
अपना हाथ
न रुठना कभी मुझसे
सदा ही करना माफ़
हम बालक नादान हैं
माँ तुम हो पालनहार
सदा सुहाग की रक्षा करना
रखना बच्चों की
सदा ही माँ लाज
लाल चूनर मैं ओढ़ आई थी
कर सोलह श्रृँगार
अपने पिया के द्वार माँ
बस एक यही विनती करूँ
कर जोड़ माँ
जब जाऊँ मैं इस दुनियाँ से
जाऊँ ओढ़ चुनरियाँ लाल
माथे में सिंदूर दमके
होंठों में हो मुस्कान
मेहंदी से हाथ हो लाल
पैरों में सजा हो महावर लाल
बाजे गाजे के साथ माँ
काँधे पे अपने पिया के
होके मैं आऊँ तेरे पास माँ

विनती

सुनों विनती मेरी मैय्याँ
तुम जल्दी सबकी पीर हर लेना
अपने भक्तों की तुम मैय्याँ
समय पे पुकार सुन लेना, सुनो विनती..

हम आएँ हैं तुम्हारे दर पे
ख़ाली झोलियाँ भर देना
है तुमसे ही एक सभी को आस
सबकी आसा पूरी कर देना, सुनो विनती..

खड़े हैं दर पे हम तेरे
निराश मैय्याँ तुम न करना
सुना है माँ तुम सुनती हो
सभी की पुकार ओ मैय्याँ, सुनो विनती..

करें दिन रैन हम सुमिरन
करे तेरी ही पूजा हम
भरो भंडार माँ तुम सबके
यही विनती करें दिन रैन, सुनो विनती..

कैद

चार दीवारों में कैद ज़िंदगी
इसका भी अपना मज़ा है
हम कैद ज़रूर हैं
पर सुरक्षित हैं अपने घरों में
पूरा परिवार साथ है
मिल बाँट कर होते हैं काम
जिसका अलग आनंद है
जिसने न उठाई थी कभी
हाथों में झाडु
न लगाया था कभी पोछा
न किए थे कोई काम
पर आज इस कोरोना ने
थमा दी हाथ में झाडु
बड़ गए अपने आप ही
मदद के लिए हाथ
कभी न सोचा था जो
आज वो हो रहा है
कोई बर्तन तो कोई
कपड़े धो रहा है
न किसी से कोई शिकवे हैं

न शिकायत ही कोई
बस चुपचाप सब काम हो रहा है
ताज़ी हो गईं यादें पुरानी
वो एक थाली में बैठ खाना
सबका साथ मिल कर टीवी देखना
आज फिर एक बार
निकल गए सबके घर कैरम
वो लूडो और ताश के पत्ते
जो खेले थे कभी साथ बैठ
आज फिर जमने लगी महफ़िल
पत्तों की
हार और जीत की होने लगी बातें
फिर गूँज रहे हैं
घर में हँसी के ठहाके
ये कैद की ज़िंदगी भी
अब अच्छी लगने
क्योंकि ये ज़िंदगी जीने का
एक मौक़ा जो दे रही

कर्मवीर

नमन कर रही सारी दुनियाँ
आज तुम्हें कर बद्ध हो
जीवनरक्षक बने आज तुम
जान पर अपनी खेलकर
चिंता न एक पल की अपनी
न अपने परिजनों की करते याद
बढें कदम कर्मपथ पर हैं आज
कर्म ही जीवन धर्म बनाया
जीवन दान दे लोगों को
खुद ही अपनी जान गँवाईं
नमन है ऐसे कर्मठ वीर जवानों को
जो निभा रहे कड़ी धूप में भी ड्यूटी
धन्य है वो सफ़ाई कर्मचारी
जो हमें सुरक्षित करने
अपनों की परवाह किए बिना
दे रहे सेवाएँ हमको
धन्य है वो जननी
जिसने जनम दिया इन वीरों को
जो कर रहे सेवा निःस्वार्थ भाव से
अपनों से दूर रह बचाने अपने देश को
आज संकट की इस बेला में
ये संकट मोचन बन आए हैं
हरने दुःख संताप हमारा
ये कर्मवीर आए हैं

जागो मोहन जागो

जागो मोहन जागो जागो मोहन जागो
आकर के हरि दरश दिखा दो जागो

अँखियाँ प्यासी हैं हरि दर्शन की
आकर प्यास बुझा दो जागो

मन व्याकुल हो रोता दिन रैन
आकर शांत करा दो जागो

तन अर्पित है हरि तेरे चरणों में
जीवन जोत जला दो जागो

न भूख बची है न प्यास लगी है
बस आस लगी हरि दर्शन तुम्हारी जागो

मन चंचल है भटकता रहता
हरि अब मानो बात हमारी जागो

अँखियाँ तरसेंगी दिन रात बरसेंगी
गर दर्शन न दोगे तुम हे नाथ हमारे जागो

भक्त अदिति हरि तुमको पुकारे निसदिन
सुन लो अरज हरि अब तुम मेरी जागो

विपदा

हे कृष्ण!
ये कैसी विपदा आन पड़ी
हाहाकार मचा है चारों ओर
न कोई राह आती नज़र
दिन ब दिन
ये संकट बड़ रहा
जाएँ हम किस ओर
इस संकट की बेला में
उद्धार करो
कल्याण करो तुम जग का
कहाँ गए हे अवतारी
अब फिर
तुमको लेना होगा अवतरण
सृष्टि की रक्षा हेतु
हे कृष्ण मुरारी
यही है
हम सब की अरदास प्रभु
न करना तुम हमें निराश प्रभु
अब आ भी जाओ बनवारी
विपदा आन पड़ी अब भारी

तप

नवसंवत्सर आया है
नई आशा की किरण लाया है
जीवन जोत जलेगी देश में
ये संदेशा लाया है

ये पर्व है माँ जगजननी का
जो करती रक्षा दुष्टों से है
करती है विनाश दानवों का ये
सब संताप हर लेती अपने भक्तों का

कठिन घड़ी है आन पड़ी
विपदा आई भारी है
हे जगदंबे उद्धार करो
इस भीषण महामारी से सबकी रक्षा करो

अपने तप और बल से माँ
हम सबका तुम दुःख हरो
किए अपराध जो हमने
उन सबको तुम माफ़ करो

किया जो मानव ने प्रकृति से खिलवाड़ है
ये सब उसका ही दुष्परिणाम है
मूरख अज्ञानी बच्चों की माँ
तुम ही अब पालनहार हो

कठिन तपस्या कर माँ
हम बचाएँगे धरा
अपने तप के बल से माँ
फिर कर देंगे सारा जग हरा भरा

शंखनाद

आज शंखनाद कर बता दिया
सारे हिंदुस्तान ने
चाहे आए कोई मुसीबत
होंगे हम सब साथ में

चाहे आए कोई बीमारी
आए कोई बड़ी महामारी
हम तो अपने फ़र्ज़ निभाएँगे
मिलकर इनको दूर भगाएँगे

ये था न केवल शंखनाद
ये था हमारी एकता का नाद
समझ सको तो समझ लो
अब जो भी हमसे टकराएगा
चूर चूर वो हो जाएगा

सज्ज हो गए सभी
लड़ने हर लड़ाई हैं
जो करना है करके देख लो
प्रेम की जोत जलाई है

चाहे हो डॉ या नर्स
चाहे हो कोई सैनिक
या हो कोई सफ़ाई कर्मचारी
जान पे खेल खेल रहे लड़ाई है

ये शंखनाद और घंटे, ताली, थाली से
जनजन में जागरूकता आई है
देश बचाने लड़ने महामारी से
सबने क़सम खाई है

इस शंखनाद से गूंजा सारा देश
मानो लग रहा था
जैसे मना रहा कोई बड़ा उत्सव है देश
सबके मुख थी ख़ुशियाँ
जैसे जीती हो कोई जंग बड़ी

फाँसी

निर्भया के अत्याचारियों को
मिल गई है फाँसी आज
आज मिली होगी शांति उसको
मेहनत रंग है लाई आज
उसके माता पिता की
ख़ुश है माता पिता
ख़ुश है हर लड़की आज
सुरक्षित होगा अब
जीवन उनका
साथ होंगे अब
क़ानून के हाथ
डरेगा अब कोई भी
किसी की अस्मिता से
खेलने के पहले
सुरक्षित होगी अब
हर बहन और बेटी
अब न होगी किसी की इज्जत
तार तार
न लुटेगी अब कोई
बेटी सरेबाज़ार

स्वार्थी

हाँ!
कुछ देर के लिए मैं
स्वार्थी हो गई थी
क्या करूँ माँ हूँ
इसीलिए शायद माँ की ममता जाग गई थी
हाँ!
कुछ देर के लिए
मैं ये भूल गई थी
जो बेटी है मेरी अब वो छोटी नहीं
बड़ी हो गई है मेरी बेटी से पहले
अब वो एक डॉ बन गई
उसे अब खुद से ज़्यादा
माता पिता की चिंता हो गई
वो अपने फ़र्ज़ निभाने चली
मुझे ही ढाँढस बंधा
कुछ न होगा मुझे
ये समझाने लगी
हाँ!
अब मेरी बेटी सयानी हो गई
खोल दी उसने आँखे
बता दिया क्या होता है
एक डॉ का फ़र्ज़ समझा दिया
चिंता में न रोना तुम माँ
करना आती है मुझको अब खुद की हिफ़ाज़त

तुम लक्ष्मी बन आना

तुम लक्ष्मी बन आना घर में
राहो में फूल बिछा दूँगी
महकाना घर आँगन तुम
प्रेम से गले लगा लूँगी

लगा के मेहंदी पी के नाम की
सज़ा के माँग सितारों भरी
पाँव में बिछुआ पहन
संस्कारों से सज्ज तुम आना मेरे अँगना

बाबा का घर छोड़ ग़म न करना
बेटी बन रहना इस घर में
जब भी याद आए माँ की
आँचल में मेरे सिमट जाना
सारे जहां की ख़ुशियाँ मिलेंगी यहाँ
जरा प्रेम से सबको अपना बना लेना

ज़िंदगी की राहों में काँटे भी मिलेंगे तुमको
तुम गुलाब बन ख़ुशबू बिखेरती रहना
कमल कीचड़ में खिलता है
पर चरणों में प्रभु के चढ़ता है
तुम कमल बन सबके दिलों में छा जाना

डरो न

डरो न डरो न बिल्कुल डरो न
करोना से तुम बिल्कुल डरो न

कुछ न करेगा तुमको करोना
गरम पानी रोज़ तुम पिया करो, डरो......

जितना भी तुम डरके रहोगे
उरना ही तुमको डराएगा करोना, डरो.......

बाहर का कुछ भी खाओ पियो न
फिर तुम देखो कुछ न करेगा ये करोना, डरो.....

हरी सब्बजियाँ खाओ मांस को छुओ न
भाग जाएगा एक दिन ख़ुद ही ये करोना, डरो.....

हैलो हाय छोड़ कर नमस्ते करो न
पास आने से डरेगा फिर करोना, डरो.....

मुँह पे मास्क लगाके तुम चलो न
फिर कैसे पास आ पाएगा करोना, डरो.....

कुछ अलग

सोचा आज कुछ अलग करते हैं
थोड़ी अपनी साज सँवर करते हैं
रसोई तो रोज़ ही सँवार लेते हैं
सबको मन-मन का बना-बना के खिला देते हैं
दिनभर की उठा पटक में
न ख़ुद पे ज़रा ध्यान देते हैं
आज कुछ अलग करके देख लेते हैं
थोड़ा सा समय आज ख़ुद को
हम दे देते हैं
थोड़ा बन सँवर के आज हम भी देख लेते हैं
दिन महीने साल बीते
जाने कब समय बीत गया
बेटी से बहु और माँ बनने का सफ़र
जाने कैसे बीत गया
नाज़ुक कलाई कब कठोर हो गई
चूड़ियों का साइज़ भी अब बदल गया
जाने ये सफ़र कैसे बीत गया
बालों की सफ़ेदी भी अब कहने लगी
अब तो तुम्हारी भी उम्र होने लगी
इसके पहले की कुछ और बदले ज़िंदगी में
सोचा थोड़ा सँवर जायें
जी ले जी भर के ज़िंदगी
बटोर लें सारे जहां की ख़ुशियाँ अपने दामन में
न जाने कब दगा दे जाए ये ज़िंदगी
छोड़ जाए हमें बीच राहों में
थोड़ा हम पर भी एक नज़र कर लो
जाने वो कौन सी साँस हो अंतिम तुम्हारी पनाहों में

हुनर

एक औरत में क्या गजब का हुनर होता है
एक बेटी से पत्नी, बहु और माँ
हर रूप में अलग अलग फ़र्ज़ निभाती है
नन्ही कली से फूल बन जाती है
हर तूफ़ानों को सहजता से झेल जाती है
हर पल पति का साथ निभाती है
हर मुश्किल में साथ खड़ी हो जाती है
बच्चों की ख़ातिर पति की डाँट भी खाती है
तो कभी वही माँ बच्चों के लिए बुरी हो जाती है
पर हर हाल में वो ख़ुश नज़र आती है
चाहे कितनी भी पीड़ा हो हर दर्द हँस कर सह जाती है
मुँह से न कुछ कह पाती है
एक अच्छी बहु, एक अच्छी पत्नी
तो कभी अच्छी माँ बनते बनते
वो खुद के हर सुख भूल जाती है
सबकी ख़ातिर जीती है पर अपने लिए जीना भूल जाती है
क्या ख़ूब हुनर दिया है ईश्वर ने
दिल में प्रेम, दया और सेवा के भाव लिए
अनवरत चलती जाती है
किसी से बिना कुछ कहे
बिना किसी शिकवे शिकायत के
चेहरे पे झूठी मुस्कान
दिल में हज़ार दर्द लिए
ख़ुशी-ख़ुशी सारा जीवन परिवार को अर्पण कर जाती है
न मुँह से आह निकलती है, न आँखों से अश्क़ बहते हैं
चुप चाप संसार से बिदा हो जाती है

मधुमास

ज़िंदगी में आती हैं कई परेशनियाँ
हँसते हँसते करना पड़ता है जिनका सामना

मिलती है कहीं काँटों भरी राहें तो
कही बिखरे होते हैं फ़ूल राहों में

कभी ठोकर लगती है पत्थरों से तो
कभी ये ही देते हैं सहारा हमकों

मिलते हैं राहों में कभी दोस्त तो
कभी होता है दुश्मनों से सामना

कभी जीवन मधुमास सा लगता है
कभी जेठ की तपती दुपहरी सा

यही है ज़िंदगी की सच्चाई
कभी धूप तो कभी छाँव है ज़िंदगी

कभी ख़ुशी कभी ग़म दोनों आते हैं
इसे हँस कर स्वीकारना ही अच्छा

मेरे मनमीत

तुम ही मेरे गीत हो संगीत हो
मेरे मीत हो मनमीत हो
तुमसे ही जीवन का सरगम है
तुम हो मेरे सरताज

तुम बिन सूना जीवन मेरा
तुम बिन सूना संसार
तुमसे सजा जीवन मेरा
तुम ही हो जीवन आधार

तुमसे है प्रीत अनोखी
प्रेम की परिभाषा तुम्हीं से सीखी
प्रेम का सागर हो तुम
श्रद्‌धा और विश्वास हो तुम

तुमसे रौशन है ज़िंदगी
ताक़त हो तुम मेरी
तुम आरज़ू हो चाहत हो
तुमसे ही चलती है हर साँस मेरी

एक छोटी सी भूल

इंद्र देव की एक छोटी सी भूल बनी
कलयुग के अवतरण का
दुर्वासा ऋषि के श्राप से
हुए देवता श्री विहीन
खोया स्वर्ण सिंहासन इंद्रदेव ने
हुआ चूरचूर अभिमान
लक्ष्मी समाई समुद्र में
नारायण हुए हैरान
सुर असुरों में युद्ध हुआ
समुद्र मंथन का आरंभ हुआ
पा लक्ष्मी को नारायण हर्षित हुए
हुआ मंथन निकला गरल
पिया गरल शिवशंभु ने कहलाए नीलकंठ
अमृत कलश प्राप्त कर
देवता हुए प्रसन्न
पश्चाताप किया इंद्र ने
माँगी क्षमा महादेव नारायण से
शक्ति स्वरूपा माता और श्री जी से
स्वर्ण सिंहासन फिर प्राप्त हुआ
स्वर्ग लोक का राज मिला

मुबारक

फूलों से गुलशन महकता है
आसमान में तारे चमकते हैं
माँग में सिंदूर सजता है
आँखों में काजल
माथे पे बिंदिया
पिया का साथ हो
हाथों में हाथ हो
तो लगती है जोड़ी सुहानी
प्रेम प्रीत से होता बंधन मज़बूत
ऐसे ही ख़ुशियाँ
बरसती रहें तुम्हारे जीवन में
चमकता रहे तारों सा
महकता रहे फूलों सा तुम्हारा जीवन
सलामत रहे तुम्हारी जोड़ी जनम-जनम
बंधन हो सात जन्मों का
देते हैं दिल से दुआ तुमको
हर लम्हा हर क्षण
बड़ता रहे प्रेम
अटूट हो तुम्हारा बंधन
राधा कृष्ण सा प्रेम हो
सिया राम सी जोड़ी
लगे न नज़र तुमको किसी की
बंधी रहे नेह की डोरी
मुबारक बादियाँ देते हैं
शादी की पच्चीसवीं सालगिरह की तुमको
ख़ुश रहो बड़ते चलो

ख़्वाब

आज पूरे बाईस की हो गई तुम
आँखों में ख़्वाब कई सजाए होंगे तुमने
कोशिश यही होगी हमारी
उन्हें पूरा कर सके हम
तुम्हारे आने से ये घर आँगन
महक उठा सारा
इधर उधर तुम्हारा ढ़ोलना
तुम्हारी प्यारी सी मुस्कान
भाने लगी है हमको
बस इस जन्मदिवस
कामना करते हैं यही
देते हैं दिल से दुआ यही
सदा ख़ुश रहो
यूँ ही मुस्कुराती रहो तुम
अपनी खिलखिलाहट से
सारे घर को लुभाती रहो तुम
क्या दूँ तोहफ़ा तुम्हें
एक वादा करती हूँ
कभी गिरने न दूँगी आँखों से तुम्हारे आँसू
तुमने ख़ुशियों से दामन भरा है हमारा
मेरे आँगन की लक्ष्मी बन आई हो तुम
बस हमेशा ऐसे ही चहकती रहना
कभी कोई बात दिल में आए तो
अपनी इस माँ से कह देना
यक़ीन मानों कभी निराश न होगी तुम
हमेशा सखी सा साथ पाओगी तुम

नाम- अदिति रूसिया

जन्म- 16/04/1972

जन्म स्थान- जबलपुर

शिक्षा- बी.ए.(पंडित रविशंकर यूनिवर्सिटी)

पिता- स्व. श्री सतीश चंद्र गुप्ता

माता- श्रीमती मंजुला गुप्ता

पति- श्री संजय रूसिया

बेटा- कार्तिक रूसिया

बेटी- कावेरी रूसिया

कार्यक्षेत्र- गृहणी

ईमेल- aditirusia@gmail.com

प्रकाशन- जीवन की धूप छांव (काव्य संग्रह), विचार मंथन (साझा-संकलन), कथा सेतू (साझा-संकलन), वूमन आवाज (नारी से नारी तक), स्त्री विमर्श, रिश्तों की डोर, और भी कई कहानी संग्रह, समय का पहिया, पीर धरा की कई काव्य संग्रह अंतरा शब्द-शक्ति, लोकजंग एवं मातृभाषा उन्नयन संस्थान में अनेक रचनाएँ प्रकाशित।

सम्मान- अंतरा शब्दशक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान, वुमन आवाज सम्मान, भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान, साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान साहित्यिक गतिविधियों में कई सम्मान प्राप्त हुए।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9424765259, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-256-2

मूल्य २५०/-